ऑस्ट्रेलिया में मिला अजीबोगरीब कैटरपिलर, एलियन कीड़े के शरीर में जोकर जैसी है शक्ल

अचानक सामने आए एलियन कैटरपिलर ने लोगों का ध्यान खींचा है अचानक सामने आए एलियन कैटरपिलर ने लोगों का ध्यान खींचा है. इंटरेनट पर इन दिनों बेहद अजीबोगरीब शक्ल वाले कैटरपिलर की तस्वीरें वायरल हो रही है.ये कैटरपिलर ऑस्ट्रेलिया के क्वींसलैंड में कोल्ड कोस्ट से मिली.इस कैटरपिलर की जोकर जैसी शक्ल की वजह से इसकी काफी चर्चा हो रही है.वैसे तो दुनिया में आए दिन कई तरह की प्रजातियों के जीव-जंतु मिलते रहते हैं.लेकिन इनमें से कुछ खास वजह से चर्चा में आ जाते हैं.जैसे ऑस्ट्रेलिया के क्वींसलैंड में मिले एक बेहद अजीबोगरीब कैटरपिलर की इन दिनों काफी चर्चा हो रही है.इस अजीबोगरीब कैटरपिलर की शक्ल कार्टून जैसी है.इस वजह से इंटरनेट पर इसकी तस्वीरें तेजी से वायरल हो रही है.

खतरे में कैटरपिलर की ये प्रजाति

कैटरपिलर की इस प्रजाति का नाम Pink Underiwng Moth बताया जा रहा है.इस प्रजाति के कैटरपिलर इंडेजर्ड केटेगरी में आते हैं.इस बेहद रेयर कैटरपिलर की प्रजाति का अचानक से मिलना शॉकिंग है.ये अपनी बनावट और चेहरे की वजह से मशहूर हैं.इनका चेहरा एक बड़ी खोपड़ी में बने आँख और दांत जैसी आकृति की वजह से यूनिक लगता है.

12 सेंटीमीटर तक बढ़ता है साइज

एनिमल एक्सपर्ट्स के मुताबिक, ये कैटरपीलर्स 12 सेंटीमीटर तक बड़े होते हैं.अपने कार्टून जैसे चेहरे की वजह से ये चर्चा में रहता है.अपने शुरूआती दिनों में जब ये लार्वा होते हैं तब अपने अजीबोगरीब लुक की वजह से ये चिड़िया और मकड़ियों को खुद से दूर रखते हैं.इसके बाद जब ये थोड़े समय बाद जब ये बड़े हो जाते हैं तब ये पेड़ की सुखी पत्तियों जैसे दिखने लगते हैं.

फेसबुक पर वायरल हुई तस्वीर

इस अजीबोगरीब कैटरपिलर की तस्वीर फेसबुक पर शेयर की गई है.इसे देखकर कई लोगों को यकीन ही नहीं हुआ कि ये कैटरपिलर है.एक महिला ने पोस्ट पर कमेंट करते हुए लिखा कि ये बेहद डरावना है.हालांकि, कुछ लोगों को ये क्यूट दिख रहा है.एक शख्स ने तो इसे एलियन तक बता दिया.इंटरनेट पर ये कैटरपिलर छाया हुआ है.

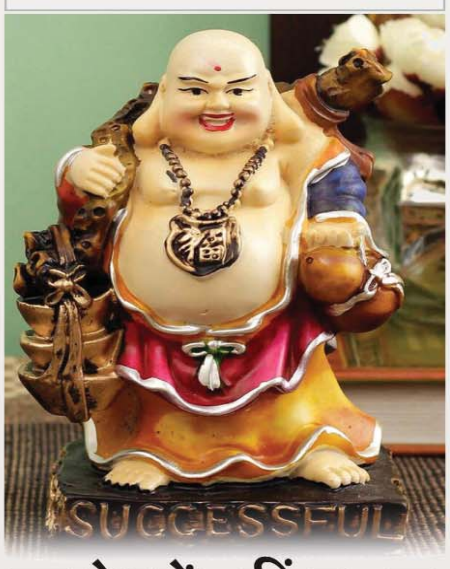

इस देश में लाफिंग बुद्धा को माना जाता है भगवान

आपने दुकानों में रखें हुए लाफिंग बुद्धा को तो देखा ही होगा। यहां तक कि कई लोग तो इन्हें अपने घरों में भी रखते हैं। लोग इन्हें सुख-समृद्धि और गुड लक लाने की वजह से इन्हें घरों और दुकानों में रखते हैं। लेकिन क्या आपको पता है कि लाफिंग बुद्धा थे कौन? और इनकी हंसी के पीछे का आखिर राज क्या है? चलिए आपको इसके पीछे का राज बताते हैं।

हंसी के पीछे का राज जो बताया जाता है वो ये है कि महात्मा बुद्ध के एक शिष्य होतेई हुआ करते थे। माना जाता है कि जब होतेई को ज्ञान की प्राप्ति हुई तब वो जोर-जोर से हंसने लगे। इसके बाद से उन्होंने अपने जीवन का एक मात्र उद्देश्य हंसने को बना लिया। बताया जाता है कि वो जहां भी जाते वहां जाकर लोगों को अपना पेट दिखाते और जोर-जोर से हंसने लगते। यही कारण था कि जापान और चीन में लोग उन्हें हंसता हुआ बुद्धा बुलाने लगे, जिसको अंग्रेज में लाफिंग बुद्धा कहते हैं।

होतेई के अनुयायियों ने भी उनके इस हंसने के संदेश का देश-दुनिया में प्रचार किया। चीन में तो होतई यानी लाफिंग बुद्धा के अनुयायियों ने उनका इस कदर प्रचार किया कि वहां के लोग उन्हें भगवान मानने लगे। वहां लोग इनकी मूर्ति को गुड लक के तौर पर घरों में रखने लगे। हालांकि चीन में लाफिंग बुद्धा को पुताइ के नाम से जाना जाता है। जैसे भारत में भगवान कुबरे को धन का देवता माना जाता है ठीक उसी तरह चीन में लाफिंग बुद्धा को ही सब कुछ माना जाता है।

करामाती बरसात

आसमान से पानी की बूंदों का बरसना प्रकृति का वरदान है। लगभग पूरी दुनिया में इस वरदान से लोग भीगते हैं। लेकिन कहीं-कहीं इस वरदान की बजाय आसमान से आफत भी बरस पड़ती है और लोगों को डाल देती है, अचरज में।

जब आसमान से गिरते हैं अजूबे!

कई सालों से दुनिया के कई हिस्सों में ऐसा हुआ है कि आसमान से बारिश की बूंदों के साथ ही मेंढकों और मछलियों की भी बारिश हुई है। ऐसे कई मामलों में कुछ बार हेल्दी मेंढक भी आसमान से गिर जाते हैं जो जमीन पर गिरकर इधर-उधर उछलकूद मचाते रहते हैं और कई बार ये मेंढक मरे हुए या बर्फ के टुकड़ों या ब्लॉक्स में दबे हुए भी होते हैं। इस तरह की घटनाएं अक्सर उन जगहों पर दिखाई देती हैं जहां टेम्प्रेचर जीरो से भी नीचे होता है। इस तरह की कुछ घटनाएं पिछले कुछ सालों में ही सर्बिया, लंदन, वेल्स और भारत में भी देखी गई हैं। भारत में मछलियां आसमान से गिरती देखी गई थीं।

होंडुरास में तो पिछली कई सदियों से लगभग हर साल ऐसी बारिश होती रही है। ऐसा अक्सर मई और जुलाई के महीनों में होता आया है। लोग कहते हैं कि जब ऐसा होता है तब पहले काले घने बादल सभी जगह छा जाते हैं, फिर खूब बिजली कड़कती है और करीब दो-तीन घंटे तक जोरदार बारिश होती है। जब बारिश रुक जाती है तब सड़कों पर, गलियों में कई सारी जिन्दा मछलिया उछलती-कूदती नजर आने लगती हैं। लोग इन मछलियों को बटोर कर घर ले जाते हैं और पकाकर खाते हैं। लोग ये मानते हैं कि ये किसी चमत्कार के कारण है जबकि विशेषज्ञ कहते हैं कि ऐसा मौसम में बदलाव से हो सकता है। मजेदार बात यह भी है ये मछलियां समुद्र की नहीं बल्कि ताजे पानी की छोटी मछलियां होती हैं और ऐसी मछलियां इस इलाके में नहीं पाई जातीं। विशेषज्ञ कहते हैं कि ऐसा तब होता है जब कोई तेज तूफान या टोरनेडो किसी उथले पानी वाली जगह से इन जंतुओं को उठाकर कई किलोमीटर दूर तक अपने साथ ले आता है और फिर बारिश के बादलों के साथ मिलकर इन जंतुओं को जगह-जगह बिखेर देता है। तुम्हें ये जानकर आश्चर्य होगा कि इस बारिश में मेंढक और मछलियों के अलावा कीड़े और घड़ियाल तक बरस सकते हैं। हालांकि इन सभी बातों को लेकर अब तक एकदम ठोस सबूत नहीं मिल पाए हैं। एक और मजेदार बात यह भी है कि दुनिया के कुछ हिस्सों में बहुत थोड़ी सी बारिश या बादल के एक टुकड़े से भी मछलियों और मेंढकों के बरसने की घटनाएं हुई हैं।

सात रंगों का छाता

बारिश के साथ जहां अजीबोगरीब चीजें धरती पर गिरती हैं वहीं खूबसूरत इन्द्रधनुष भी बारिश की बूंदों की ही देन है। इसका बनना भी किसी सुन्दर सी गिफ्ट जैसा ही है। दुनिया भर में कई जगह ऐसे इन्द्रधनुष बनते हैं जिनकी छटा अद्भुत होती है। इन्द्रधनुष का बनना पानी की बूंदों के साथ प्रकाश के एक एंगल के जुड़ने से संभव होता है। यही कारण है कि तुम घर में भी पानी से भरे बर्तन को लाइट के साथ एडजेस्ट करके अपना पर्सनल रेनबो बना सकते हो। इन्द्रधनुष के बनने के पीछे जहां सूरज उत्तरदाई होता है, वहीं चन्द्रमा के कारण बनता है 'मून बो।' ऐसा तब होता है जब चांद बहुत नीचे होता है और लगभग पूरा या पूरा होता है। ऐसा बहुत रेयर होता है। अमेरिका में केंटुकी के पास कंबरलैंड फाल्स एक ऐसी ही जगह है जहाँ रात को मून बो दिखाई दे सकता है।

वाटरफॉल्स के करीब अक्सर इन्द्रधनुष देखे जा सकते हैं। मध्यप्रदेश में रीवा-सीधी जिलों में मौजूद ऐसे कई वाटरफॉल्स हैं जहां खूबसूरत रेनबो देखे जा सकते हैं। जो रेनबो हमें अक्सर दिखाई देते हैं उन्हें प्राइमरी इन्द्रधनुष कहा जाता है। कई बार इन्द्रधनुष डबल दिखाई देता है, तब उसे सेकेण्डरी इन्द्रधनुष कहा जाता है। इसके कलर्स भी प्राइमरी इन्द्रधनुष से उलटे होते हैं। कई सारे इन्द्रधनुष से सजे रेनबो सुपर न्युमेररी इन्द्रधनुष कहलाते हैं। इसके अलावा इन्द्रधनुष को उनकी रितिथि के लिहाज से कई नाम दिए जाते हैं। जैसे रेड इन्द्रधनुष, क्लाउड इन्द्रधनुष, ट्वींद इन्द्रधनुष आदि।

मिल्कशेक सा है इस तालाब का पानी!

सेनेगल के डाकार में एक ऐसा तालाब है, जिसका पानी स्ट्रॉबेरी मिल्कशेक की तरह नजर आता है। इसका कारण है हेलोफिलिक बैक्टीरिया है!

मिल्कशेक भला किसे पसंद नहीं होगा, क्या तुम्हें भी स्ट्रॉबेरी मिल्क शेक का स्वाद पसंद है। तुम्हें पता है सेनेगल के डाकार में एक ऐसा तालाब है, जिसका पानी पूरी तरह से स्ट्रॉबेरी मिल्कशेक की तरह नजर आता है। आ गया न मुंह में पानी! इतना ही नहीं तालाब का पानी दिन में समय बदलने के साथ-साथ अपना रंग भी बदलता है।

तालाब का पानी हल्के पर्पल कलर से लेकर डार्क पिंक हो जाता है। डाकार के इस रेटाबा या लेक रोज तालाब के गुलाबी होने का कारण है हेलोफिलिक बैक्टीरिया है लेकिन यह पानी को किसी प्रकार का नुकसान नहीं पहुंचाते। तालाब का रंग सूखे मौसम में और भी स्पष्ट रूप से नजर आता है।

पिंक क्यों है यह तालाब

सॉल्ट पसंद करने वाले एल्गी डूनालिएला सेलिना तालाब में पिंक रंग बनाती है। ये एल्गी लाल रंग बनाती है, जो सूर्य की रोशनी से एनर्जी यूज भी करती है और उसे बनाती भी, जिससे और अधिक मात्रा में ऊर्जा का निर्माण होता है और पानी का रंग पिंक हो जाता है।

स्थानीय लोग इस तालाब से काफी मात्रा में नमक इकठ्ठा करते हैं और मछलियों को उसमें प्रिजर्व करते हैं, जिससे मछलियां जल्दी खराब नहीं होतीं।

पानी में जाने से पहले

तालाब के पानी में इतनी मात्रा में नमक होता है कि इस तालाब में जाने से पहले लोग अपने शरीर पर शिया बटर लगाते हैं, जो उन्हें शिया नट ट्री से मिल जाता है। शिया बटर लगाने से लोगो की स्किन पर उसका असर नहीं होता।

पत्थर की कीमत

एक समय की बात है। एक छोटे से कस्बे में एक साधु महाराज पधारे। उनके पास बहुत से दुखी लोग आशीर्वाद लेने पहुंचे। उन्हीं में एक था श्यामा। उनसे साधु महाराज से कहा, मैं बहुत ही गरीब हूं, मेरे ऊपर बहुत कर्ज है और बस यही समझ लीजिए कि मेरा जीवन अब डूबने ही वाला है। मैं चाहता हूं कि आपकी कुछ कृपा मुझ पर हो जाए।

साधु को श्यामा पर तरस आया। उन्होंने एक चमकीला नीला पत्थर देते हुए कहा 'यह बहुत कीमती पत्थर है'। इसे बाजार में अच्छी दाम पर बेचकर अपना सारा कर्ज चुकता कर लेना और जो पैसे बच जाए उससे खुशी-खुशी अपना गुजारा करना। अब यह तुम्हारे ऊपर है कि तुम इसे कितने में बेच सकते हो?

श्यामा वहां से पत्थर लेकर निकला, सबसे पहले एक सब्जी वाले को वह पत्थर दिखाकर कहा यह तुम रख लो, बहुत कीमती पत्थर है। इसके क्या दाम दोगे? सब्जी वाले ने देखा तो उसने कहा यह तो कोई मामूली पत्थर लगता है। फिर भी मैं इसके तुम्हें सौ रुपए दे सकता हूं। यह सुनकर श्यामा निराश होकर अपना पत्थर लेकर चला गया। अब वह एक फल बेचने वाले पास गया, फलवाले को थोड़ा-बहुत ज्ञान था, उसने कहा महात्मा ने तुम्हें ये पत्थर यूं ही दे दिया है, ये कोई खास कीमती पत्थर नहीं है, फिर भी मैं तुम्हें एक हजार रुपए दे सकता हूं। यह सुनकर श्यामा निराश होकर सोचने लगा इस पत्थर से तो मेरा कर्जा चुकता नहीं होगा।

अब वह किराना दुकानदार के यहा पहुंच और उसे पत्थर दिखाया। दुकानदार बोला, वैसे तो यह कोई खास पत्थर नहीं है, फिर भी यदि तुम चाहो तो मैं तुम्हें इसके दस हजार रुपए तक दे सकता हूं। यह सुनकर श्यामा के चेहरे पर थोड़ी खुशी दिखाई दी, लेकिन वह सोचने लगा कि इससे तो मेरा पूरा कर्ज नहीं उतरेगा तो क्या करना है इसे बेचकर?

श्यामा अब एक बर्तन वाले के पास गया, जो उसके जान पहचान वाला ही था। उसने नीले चमकीले पत्थर को देखा और कहा- लगता तो यह कीमती पत्थर है? यह कोई खास रत्न भी हो सकता है। मैं तुम्हें इसके एक लाख रुपए तक दे सकता हूं। यह बात सुनकर अब श्यामा सोचने लगा कि हो ना हो इसकी कीमत इससे भी ज्यादा होगी।

समझो इससे मेरा कर्ज तो उतर ही जाएगा और वह उस पत्थर को लेकर चला गया। अब की बार श्यामा एक सुनार के पास जाकर वह पत्थर दिखाया तो सुनार बोला- यह तो काफी कीमती लग रहा है। बहुत सोच-विचार के बाद पांच लाख रुपए देने की बात कही। यह कीमत सुनकर श्यामा खुश होते हुए उछल पड़ा और सोचने लगा कि यह कीमत तो शानदार है। किंतु मन ही मन वह सोचने पर मजबूर हो गया कि हो ना हो इसकी कीमत इससे भी ज्यादा हो सकती है।

अब वह उस अमूल्य पत्थर को लेकर हीरा व्यापारी के पास गया। अब तक उसकी समझ में यह बात आ गई थी कि यह कोई मामूली पत्थर नहीं है। हीरा व्यापारी ने उस पत्थर को देखा और चौंक कर कहा- कहा से हाथ लगा तुम्हें यह? यह तो बहुत ही कीमती है। व्यापारी का चेहरे के भाव देखकर श्यामा समझ गया कि अब मैं पत्थर को लेकर सही जगह पर आया हूं। हीरा व्यापारी ने पत्थर को अपने माथे से लगाकर पूछा- बताओ, कितने रुपए लोगों इसके? यह सुनतेही श्यामा ने कहा- आप कितने दाम दोगे इसके? व्यापारी ने कहा- दस लाख रुपए। अब तक श्यामा को पत्थर की कीमत समझ आ चुकी थी, उसने कहा, दस नहीं, पूरे बीस लाख लूंगा, बोलो है मंजूर तो? तब थोड़ी-बहुत बातचीत के बाद अंत में वह पत्थर पंद्रह लाख में बिका। व्यापारी मन ही मन सोचने लगा, चलो सस्ते में सौदा हो गया।

सच्चा मित्र

बहुत समय पहले की बात है। दो बहुत पक्के दोस्त थे। एक बार वे जंगल से गुजरते हुए खतरनाक रास्ते से जा रहे थे। वह रास्ता बिलकुल एकांत स्थान वाला था। जैसे-जैसे सूरज ढलने लगा, उन्हें डर लगने लगा, लेकिन उन्होंने एक-दूसरे का साथ नहीं छोड़ा। तभी अचानक उन्होंने देखा कि सामने से एक भालू आ रहा है, एक दोस्त सबसे नजदीकी पेड़ की ओर दौड़ा और फटाफट ऊपर चढ़ गया, लेकिन दूसरा पेड़ पर चढ़ना नहीं जानता था इसलिए वह मरे हुए व्यक्ति के समान नाटक करते हुए जमीन पर लेट गया। भालू जमीन पर पड़े लड़के के पास गया और उसके सिर के चारों ओर सूंघने लगा। लड़के को मरा हुआ जानकर, भालू आगे बढ़ गया। अब पेड़ पर चढ़ा दोस्त नीचे उतरा और उसने अपने दोस्त से पूछा कि भालू ने उसके कान में क्या कहा? दूसरे दोस्त ने जवाब दिया, 'उन दोस्तों पर कभी भी भरोसा मत करना जो तुम्हारी परवाह नहीं करते हैं। जो मुसीबत में खुद की जान बचाए और दूसरे के काम ना आए वो कैसा दोस्त।' अब पहले दोस्त को अपनी गलती का अहसास हो गया और उसने अपने मित्र से माफी मांगते हुए कहा- माफ करना दोस्त, मैं अपनी गलती पर शर्मिंदा हूं।